यात्रा वृतांत

धर्मशाला, डलहौजी और चंबा, कर देते मन चंगा

सपना मांगलिक

अगर आप खुद से खुद की मुलाक़ात कराना चाहते हैं तो आँख बंद कर हिमालय की खूबसूरत वादियों में चले जाइए। आंतरिक शांति और सुकून जितना हिमालय के हरेभरे और देवदार के घने जंगलों, सेब के बाग़ों, बर्फ़ की चादरों, झीलों और नदियों और यहां के प्रमुख पर्यटन स्थल शिमला, कुल्लू, मनाली, डलहौज़ी, चंबा, कांगड़ा ,धर्मशाला, इत्यादि रमणीय स्थानों में आपको मिलेगा उतना देश या विदेश कहीं भी प्राप्त नहीं होगा। मैं हर वर्ष होली का बेसब्री से इंतज़ार करती हूँ। अरे न भाई ना, आप गलत समझ रहे हैं ,रंगों से खेलने या होली जलाने का मुझे कतई शौक नहीं है वरन पतिदेव अपने कारखाने की होली पर करीब छः सात दिन की छुट्टियाँ रखते हैं जिनमे हम अपनी उबाऊ और एकरस जिन्दगी में कुछ नए रंग भरने के लिए कहीं न कहीं घूमने निकल पड़ते हैं। इस बार मैंने आकांक्षा जताई धर्मशाला ,चम्बा और चामुंडा देवी के दर्शन करने की तो साहब पतिदेव ने भी फ़ौरन हामी भर ली, क्योंकि इन जगहों पर वह इससे पहले कभी नहीं गए थे। हालांकि मैं बचपन में अपने माँ के साथ नौ देवियों के दर्शन करने गयी थी। तब चम्बा और धर्मशाला भी होकर आई थी। मगर इतने वर्षों के बाद वो रोमांच और यादें सभी हल्का हो चुका था। लिहाजा दोवारा उन्ही जगहों पर जाने की ख़ुशी पहली दफा से भी कहीं ज्यादा थी। हमने छोटी होली वाले दिन दिल्ली से पठानकोट का रिजर्वेशन कराया। तय समय पर हमारे रोमांच की रुकी रेल ने थोडा सा हिलते और कम्पन करते अपना छुकछुक वाला धडधडाता सफ़र शुरू किया। एसी के तृतीय श्रेणी कोच में सभी चेहरे अनजाने अपनी सीटों को ढूंढते, लगेज लगाते और चाय और खान पान सामग्री के वेंडर ऊँची-ऊँची आवाजें लगाते हमारे श्रवण इन्द्रियों को व्यायाम करवा रहे थे। हमने भी सामान व्यवस्थित कर चाय वाले से चाय लेकर चुस्कियां लगाना शुरू किया और चाय की चुस्कियों के साथ ही मेरी लेखकीय नजरें आस –पास का सूक्ष्मता से जायजा लेने लगीं। रेल में जहाँ औरतें बच्चों को संभालती नाटकों और फैशन के चलन की जानकारी इकठ्ठा कर रहीं थीं वहीं पुरुष भारत की राजनैतिक ,आर्थिक और सामाजिक समस्याओं पर मंथन करने में लगे थे। हर व्यक्ति अपने को विषय विशेष का विशेषज्ञ साबित करने पर आमादा था और कभी मसाला चबाते तो कभी चाय का सुड्का मार, कुछ तास के पत्ते पटकते तो कुछ पान की पीक थूकते और शौचालय के पास खड़े हो भारत के किसी न किसी दल का प्रतिनिधित्व करते अवश्य मिल जाते। थोडी ही देर में पहाड भी शुरु हो गये। हांलाकि बरसात रुक चुकी थी लेकिन पहाड अभी भी भीगे हुए थे। बस से हरी भरी वादियों को देखना आखो को चैन दे रहा था । पठानकोट रेलवे स्टेशन पर रेल ने विराम लिया। हम आँखें मलते ,वस्त्र ठीक करते और सामान संभालते रेल से नीचे उतरे और आस पास के लोगों से यहाँ के टूर एंड ट्रेवल्स वालों के बारे में और आस पास के दर्शनीय स्थानों की पूछताछ करने लगे। मेरे सर में थोड़ा दर्द था तो मैंने पतिदेव से चाय पीने की इच्छा जाहिर की, मगर तभी ओटो वाला बोल पड़ा कि “भैया जी पठानकोट आये और यहाँ की लस्सी न पी तो क्या पिया” लस्सी माता की महिमा सुनकर मुंह में से पानी बह निकला और तय किया कि पहले एक अच्छी सी जगह लस्सी और नाश्ता करें। उसके बाद आगे कि सोचें। एक ढाबे नुमा दूकान पर उसने ऑटो रोका और बताया कि इसकी लस्सी बहुत अच्छी होती है। लस्सी बाकई बड़े बड़े गिलासों में भरकर आई थी जिसे हम भूखे बनिए जल्दी से गटक गए और लस्सी पेट में पहुँचने के साथ ही दिल और दिमाग इतना तरोताजा हो गया कि हमने दो तीन आलू के परांठे मक्खन मारकर खा लिए। अब पेटराम अपने पाचन कार्य में व्यस्त हो गए और हम ‘अपना टूर एंड ट्रेवल्स ‘के ऑफिस में धर्मशाला, चम्बा और डलहौजी का पैकेज बनवाने में। हमारे पैकेज

में होटल और केब शामिल थे। पैकेज से फायदा यह होता है कि आपको अपनी जेब के हिसाब से सुबिधायें भी मिल जाती हैं और उन्हें यहाँ वहां खोजने में समय भी बर्बाद नहीं होता। पैकेज अनुसार हम पठानकोट से सत्रह किलोमीटर की टैक्सी यात्रा कर आसानी से धर्मशाला पहुंच गए। दुनिया के सबसे ऊंचे और ख़ूबसूरत क्रिकेट मैदान के लिए सुर्खियों में रहने वाला धर्मशाला, प्राकृतिक सौन्दर्य का अनमोल नमूना है। कांगड़ा घाटी में हिमालय की घौलाधार पहाड़ियों पर बसे इस बेहद ख़ूबसूरत शहर की तरफ़ लोग बस यूं ही खिंचे चले आते हैं। हिमालय की बर्फ से ढ़की चोटियां, चारों ओर हरे भरे खेत, हरियाली और कुदरती नजारे, चीड और देवदार के वृक्ष मानो अपनी बाहें खोल आपको मोहक आमंत्रण दे रहे हों। धर्मशाला को तिब्बती धर्म गुरू दलाई लामा का घर भी कहा जाता है। यहां तिब्बती संस्कृति की झलक खूब देखने को मिलती है। धर्मशाला की ऊंचाई भी हिमाचल प्रदेश के दूसरे शहरों से ज़्यादा है। प्रकृति की गोद में शांती और सुकून से कुछ दिन बिताने के लिए यह बेहद अच्छी जगह है।

धर्मशाला :

दरअसल धर्मशाला के दो हिस्से हैं, एक है निचला धर्मशाला जो करीब तेरह सौ मीटर की उँचाई पर है, और दूसरा है ऊपरी धर्मशाला जो करीब अठारह सौ मीटर की ऊँचाई पर है। ऊपरी धर्मशाला में साठ के दशक में तिब्बत से निर्वासित तिब्बती लोग रहे है जो कि दलाई लामा के साथ भारत आ गये थे। ज्यादातर पर्यटक ऊपरी धर्मशाला में ही जाते हैं क्योकि वहां अलग तरह कि बौद्द संस्कृति देखन को मिलती है। इसी ऊपरी धर्मशाला को मैक्लोडगंज कहा जाता है। कहा जाता है कि कांगड़ा घाटी के इस महत्त्वपूर्ण शहर में सन् 1905 में एक विनाशकारी भूकंप आया था, जिसके बाद इसका पुनः निर्माण किया गया और यह स्थान एक सुंदर हैल्थ रिसोर्ट और पर्यटन का महत्त्वपूर्ण आकर्षण बन गया। धर्मशाला में सबसे कलात्मक यहाँ का बौद्ध मत है जहाँ दलाई लामा निवास करते हैं यहाँ की सीढियों पर एक बड़ा सा घंटा रखा है बुद्ध की तरह-तरह की मुद्रा में कई सोने की तरह चमचमाती मूर्तियाँ है हम जब इस मठ में पहुंचे तो बारिश से पूरे भीग चुके थे और मस्ती के मूड में भी थे हमारी आपसी चुहल से धर्म ग्रंथों का पाठ करते भिक्षुओं का ध्यान शायद भंग हो रहा था, इसलिए वह हमें हाथ के इशारे से चुप होने का संकेत दे रहे थे। यहाँ का सबसे ऊँचा वाटर फॉल हमने बहुत नीचे से देखा, क्योंकि उंचाई से मुझे डर लगता है। गडगडाहट के साथ गिरता झरने का साफ़ स्वच्छ दूधिया पानी मानो चट्टानों से नहीं मानो मन से बहकर जा रहा था। कुछ निर्भीक लोग इस झरने के ऊपरी हिस्से पर जाकर फोटोग्राफी कर रहे थे मगर हमें अपनी जान और सामान दोनों ही बहुत प्यारे थे सो हमने नीचे से कुछ तसवीरें लीं। यहाँ पहाड़ों पर लकड़ी का फ्रेम सा डालकर लोग सामान बेच रहे थे जिनमे छोटी-छोटी फलों की टोकरी और आम पापड मुख्य थे। धर्मशाला में स्थित कांगड़ा कला संग्रहालय में इस जगह के कलात्मक और सांस्कृतिक चिन्ह मिलते हैं। विशाल तिब्बती बस्तियों के कारण इस जगह को अब लामाओं की भूमि के रूप में जाना जाता है। इस क्षेत्र में मक्लोडगंज एक प्रमुख धार्मिक केंद्र बन गया है जहां तिब्बती बौद्ध धर्म की शिक्षा और धर्म को बढ़ावा दिया जाता है। हमने मैक्लोडगंज से कुछ लकड़ी के हस्तशिल्प और सिल्क पेंटिंग भी खरीदी। इस क्षेत्र में अनेक चर्च, मंदिर, संग्रहालय और मठ हैं। अनेक प्राचीन मंदिर जैसे ज्वालामुखी मंदिर, बज्रेश्वरी मंदिर और चामुंडा मंदिर बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। धर्मशाला के अन्य प्रमुख पर्यटन स्थलों के अंतर्गत कांगड़ा आर्ट म्यूजियम कला संग्रहालय, सेंट जॉन चर्च और वॉर मेमोरियल युद्ध स्मारक शामिल हैं। इसके अलावा कोतवाली बाजार इस स्थान का जाना माना खरीददारी केंद्र है, जो अनेक पर्यटकों को आकर्षित करता है। शिव का बहुत पुराना मंदिर अघंजर महादेव भी आकर्षण का केंद्र हैं। इसके नीचे बहने वाले पानी के झरनों में पर्यटक नाहते हैं,खूब मस्ती करते हैं। इसके अतिरिक्त चाय बागान, चीड़ के जंगल और देवदार के पेड़ इस स्थान के आकर्षण को बढ़ाते हैं।

डलहौजी यात्रा :

कुदरत के खूबसूरत नजारों के लिए दुनिया भर में जाना जाने वाला डलहौजी शहर पांच पहाड़ियों पर बसा है। 1853 में अंग्रेजों ने यहां की जलवायु से प्रभावित होकर पोर्ट्रिन, कठलोश, टेहरा, बकरोटा और बलून पहाड़ियों को चंबा के राजाओं से खरीद लिया था। इसके बाद इस स्थान का नाम लॉर्ड डलहौजी के नाम पर डलहौजी रख दिया गया। बलून पहाड़ी पर उन्होंने छावनी बसाई, जहां आज भी छावनी क्षेत्र है। सुभाष चौक, यहां का छोटा सा प्वाइंट है, जहां तमाम पर्यटक जुटते हैं। पहाड़ी के किनारे पर सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा लगी है। अपने जीवन के कुछ दिन उन्होंने डलहौजी में बिताए थे। प्रतिमा के आसपास रोलिंग तथा कुछ बेंच लगे हैं। यहां से आसपास की पहाड़ियों के अलावा पंजाब के मैदानी क्षेत्र के दृश्य भी नजर आते हैं। यहां खड़े सैलानी सर्द मौसम की खिली धूप का आनंद लेते हैं। यहां एक चर्च भी है। डलहौजी का ऐसा ही दूसरा प्वाइंट है गांधी चौक। सुभाष चौक से गांधी चौक जाने के लिए दो मार्ग हैं। इनमें एक गर्म सड़क कहलाता है और दूसरा ठंडी सड़क। गर्म सड़क सन फेसिंग है। वहां अधिकांश समय धूप रहती है। जबकि ठंडी सड़क पर सूर्य के दर्शन कम ही होते हैं। हिमपात के दिनों में इधर बर्फ भी देर से पिघलती है। ठंडी सड़क को माल रोड भी कहते हैं। गांधी चौक पर भी छोटा सा बाजार, कुछ रेस्टोरेंट और फास्ट फूड पार्लर आदि हैं। यहीं एक ओर कतार में कुछ घोड़े भी खड़े रहते हैं, जो लोगों की घुड़सवारी का शौक पूरा करते हैं। चौक से थोड़ा आगे तिब्बती बाजार है। यहां एक टैक्सी स्टैंड है । जहाँ आस पास की घुमक्कड़ी के लिए टैक्सियाँ मिल जाती हैं।

सतधारा, पंजपुला, सुभाष बाओली और जंदरी घाट जैसे दर्शनीय स्थल निकट ही हैं। स्थानीय लोग बताते हैं कि सतधारा में पहले कभी जल की सात धाराएं झरने के रूप में बहती थीं, और इसका जल औषधीय गुणों से युक्त होता था। आज यहां साधारण सी एक जलधारा बहती है। सतधारा से एक किलोमीटर दूर पंजपुला है। यह एक छोटा सा पिकनिक स्पॉट है। यहां से एक पैदल मार्ग धर्मशाला की ओर जाता था। उस मार्ग पर पांच पुल थे। सैलानियों को यह मार्ग बहुत सुंदर लगता था। इसलिए उन्होंने इसे पंजपुला कहना शुरू कर दिया। यहां से हिमाच्छादित पर्वतों के मनभावन दृश्य देखते ही बनते हैं। एक किलोमीटर दूर जंदरीघाट है। जहाँ से आस पास के गाँव, ढलानों पर बने सीढ़ीनुमा खेत, ऊंचे वृक्षों की लंबी कतारें इत्यादि दिखाई देती हैं ।

चट्टानों पर भित्तिचित्र :

गांधी चौक मार्ग की पहाड़ी चट्टानों पर सुंदर भित्तिचित्र बने हैं। ये भित्तिचित्र तिब्बती बौद्ध धर्मावलंबियों ने बनवाए हैं। इन चित्रों का सुंदर ढंग से संयोजन किया गया है। नदी, पहाड़, झरने, तालाब, समुद्र, आकाश, पंछी, हवा ये सभी प्रकृति के अंग हैं और मुझे ये सबसे ज्यादा प्रभावित करते हैं। डलहौजी भी इन सभी प्राकृतिक नजारों से भरपूर जगह है। यहाँ का सबसे ऊंचा पर्यटन स्थल दैनकुंड है जो कि 10 किलोमीटर दूर है। आप वहां से आसपास का विहंगम दृश्य भी देख सकते हैं। देवदार और चीड के घने वृक्षों से लदे –फदे इन वनों में जब हवा चलती है तो ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति हवा के साज पर संगीत की स्वर लहरियां बिखेर रही हो। शायद इसलिए ही इसे म्युसिकल वैली कहा जाता है। माल रोड हमारे होटल से कुछ ही दूरी पर था इसलिए शाम को हम पैदल ही मालरोड की तरफ चल दिए, तिब्बती मार्केट संकरा था जिसमे चारों तरफ कतारों में बनी ऊनी वस्त्र ,अन्य मार्केट में लकड़ी के सामान और हस्तशिल्प की बस्तुएं ,जगह जगह आराम करने के लिए बेंच भी रखी हुईं थीं। जो हम जैसे स्थूल लोगों को दो घड़ी बैठने से आराम प्रदान कर रहीं थीं। यहाँ खाने में जलेबी, अंडे और मैगी मिल रहे थे। डलहौजी में बंदर काफी देखने को मिल। उनकी फ़ौज देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि लार्ड डलहौजी वापस फिरंगियों के साथ यहाँ आतंक फैलाने आ गए हों। खैर मेरी बुद्धू कल्पनाओं का अंत नहीं। थोड़ी थोड़ी बूंदा बंदी में हमने गर्मागर्म चाय और पकौड़े का लुत्फ़ लिया। सैर सपाटे के दौरान ही लोगों ने बताया कि यहाँ पास ही खजियार नाम का पर्यटन स्थल है मगर खजियार हमारे पैकेज में नहीं था और समय भी सीमित था अत: हम डलहौजी से सीधे चंबा घूमने निकले।

हमारी चंबा यात्रा धार्मिक आस्था, कला, शिल्प, परंपराओं और प्राकृतिक सौंदर्य को अपने आंचल में समेटे चंबा हिमाचल की सभ्यता और संस्कृति का जीवंत प्रतीक है।चंबा डलहौज़ी से लगभग 56 किमी दूर है। सैलानी डलहौज़ी से चंबा दिन भर घूम कर भी शाम को वापस डलहौज़ी आ सकते है। चंबा शहर के नाम के पीछे भी एक रोचक कहानी है ,कहा जाता है कि दसवीं शताब्दी में यहां के राजा साहिल वर्मा ने अपनी पुत्री चंपावती की इच्छा पर इस मनोरम स्थान पर नगर बसाकर उसका नाम चम्पा रख दिया और अपनी राजधानी भी यहां स्थानांतरित कर ली। वही चंपा बाद में चंबा कहलाने लगा। चंबा शहर अपनी खूबसूरती और स्थापत्य कला के साथ साथ मंदिरों के लिए भी विख्यात है। इसे मंदिरों का शहर भी कहें तो अतिश्योक्ति न होगी। चंबा शहर के आरंभ में छोटा सा बस स्टैंड तथा एक बाजार है। उससे कुछ आगे शहर का मुख्य हिस्सा शुरू हो जाता है। वहां कई साफ़ सुथरे होटल हैं। चंबा की सैर के लिए निकलते समय सामने एक बड़ा सा घास का मैदान है। यह मैदान चौगान कहलाता है। यहां से पहाड़ी पर बसा पूरा चंबा शहर नजर आता है। कभी यहां के राजाओं का पोलो ग्राउंड रहा यह मैदान आज एक विशाल उद्यान और मेला मैदान है। हमने कैफेटेरिया रावी व्यू में जलपान करके पहले तो उदर अग्नि को शांत किया। फिर निकल पड़े चम्बा शहर के दीदार के लिए।

चंबा के मन्दिर :

चम्बा का सबसे लोकप्रिय मन्दिर लक्ष्मी नारायण मंदिर है। जो धार्मिक आस्था तथा स्थापत्य कला, दोनों ही दृष्टिकोण से बेजोड़ हैं। प्रवेशद्वार के बाहर एक ऊंचे स्तंभ पर धातु की बनी गरुड़ की प्रतिमा है। अंदर प्रांगण में तीन मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित हैं, और तीन भगवान शिव को। इनमें लक्ष्मी नारायण जी को समर्पित मंदिर सबसे बड़ा तथा प्राचीन है। इसके आसपास ही राधे-कृष्ण जी का, चंद्रगुप्त, गौरीशंकर, त्रयम्बकेश्वर और लक्ष्मी दामोदर मंदिर हैं। इसमें चार मुख और चार हाथों वाली विष्णु जी की आदमकद प्रतिमा है, जिसके पीछे की ओर बने तोरण पर विष्णु भगवान् के दसों अवतारों का वर्णन है। यहाँ का दूसरा लोकप्रिय मन्दिर चामुंडा मन्दिर है जो नव शक्तिपीठ में से एक है। इस मंदिर की सीढियां चढ़ते चढ़ते सांस फूल गयी लगभग 400 सीढ़ी तय करके जब मंदिर में पहुंचे तो एक अद्भुत आत्मिक शांति महसूस की। लकड़ी से बना भवन व ढलावदार छत पहाड़ी शैली की हैं। चंबा के राजाओं की कुलदेवी चामुंडा के इस प्राचीन मंदिर के परिसर से रावी घाटी का विहंगम दृश्य भी नजर आता है। करीब एक किलोमीटर दूर दूसरी पहाड़ी पर सूही माता मंदिर है। यह मंदिर एक प्रकार से रानी सूही का स्मारक है। बताते हैं 10वीं शताब्दी में नगर स्थापना के समय रानी सूही का बलिदान देने पर यहां जल की धारा पहुंच सकी थी। इस मंदिर पर हर वर्ष एक मेला लगता है। सूही मेले के अवसर पर यहां की लड़कियां रानी सूही की प्रशंसा में गीत गाती हैं। इन पारंपरिक गीतों को घुरेई कहते हैं। चंबा में अन्य दर्शनीय मंदिर, हरिराय मंदिर, बज्रेश्वरी देवी मंदिर, चंपावती मंदिर और शीतला माता मंदिर हैं।

मणि महेश झील :

मणिमहेश यहां के पर्वतों में स्थित सुंदर झील है। गाइड ने बताया कि इसमें कैलाश पर्वत का प्रतिबिम्ब नजर आता है और हर साल इसी स्थान पर अगस्त में भव्य मिंजर मेले का भी आयोजन किया जाता है। अगर चम्बा का जन जीवन और संस्कृति से रूबरू होना है तो यहाँ अगस्त के महीने में आना ज्यादा बेहतर रहेगा। इस मेले में न घूम पाने का मुझे बहुत मलाल हुआ। झील के पास बना मणिमहेश मंदिर हिमालय के सबसे प्राचीन एवम् सुंदरतम मंदिरों में से है। इस, मंदिर में श्वेत लिंग की प्रतिमा एवं मर्दिनी की पीतल की प्रतिमा है। यहां जन्माष्टमी के पन्द्रह दिन बाद प्रति वर्ष तीर्थ यात्रियों का मेला लगता है। यात्री इसके जल में स्नान कर मंदिर में पूजा करते हैं।

अखंड चंडी महल :

पर्वतीय शैली में बना यह महल राजस्थान के महलों जैसा भव्य नहीं है। किंतु पहाड़ी स्थापत्य के पुरातत्व महत्व की यह एक महत्वपूर्ण इमारत है। उस दौर की तमाम वस्तुएं यहां संग्रहालय में हैं। रंगमहल भी

यहां की एक ऐतिहासिक इमारत है। इस इमारत में हिमाचल हस्तशिल्प एवं हथकरघा निगम का कार्यालय भी है।

भूरीसिंह संग्रहालय :

भूरीसिंह संग्रहालय में चंबा की ऐतिहासिक स्मृतियों के कई साक्ष्य मौजूद हैं। यहां के संग्रह में चंबा व आसपास के क्षेत्रों से प्राप्त प्राचीन शिलालेख, पनघट शिलाएं, मूर्तियां, पांडुलिपियां शामिल हैं। कांगड़ा और गुलेर शैली के लघु चित्र, राजाओं के वस्त्र-आभूषण, बर्तन, शस्त्र, सिक्के और चंबा रुमाल आदि कई चीजें महलों से लाकर यहां रखी गई हैं। संग्रहालय का वर्तमान भवन तो 1985 में बना, किंतु इसकी स्थापना 1908 में राजा भूरीसिंह ने की थी।

वापस लौटते समय हमने चंबा से कुछ चंबा चप्पल तथा चंबा रुमाल रिश्तेदारों और मित्रों को तोहफे के स्वरुप भेंट करने हेतु खरीदे, दोतरफा कशीदाकारी की अनोखी शैली के कारण चंबा रुमाल पूरे देश में प्रसिद्ध हैं, जिनपर फूल पट्टी ,युगल, पौराणिक चित्र, पशुपक्षी एवं प्राकृतिक दृश्य बड़ी ही खूबसूरती के साथ उकेरे जाते हैं।

मुझे जो इस सफ़र में सबसे ज्यादा प्रभावित किया वो था यहाँ के लोगों का सरल स्वभाव, जीवन क्या होता है ये आप पहाड़ी लोगों से सीखिए। उनका जीवन इतना सादा स्वच्छ, आत्म निर्भर अच्छा था कि वहाँ जाकर रम जाने का दिल करता है। महिला और पुरुष कंधे से कन्धा मिलाकर आर्थिक उपार्जन करते हैं। उनकी मीठी बोली, चटख वेशभूषा उनका भोलापन सबने मेरा मन मोह लिया। हिमाचल यानी हिम का आंचल और हिम के आँचल में पलने वाले यह लोग उतने ही निष्पाप थे जैसे माँ के आंचल में किलोल करता कोई शिशु। उन लोगों का जीवन वास्तव में आदर और प्रसंशा करने लायक था। मैं वहां के लोगों से सरल और ईमानदार बने रहने की सीख लेकर लौटी। पता नहीं व्यवहारिक जीवन में इसपर कितना अमल कर पाउंगी, मगर यह तो तय है कि जब भी जीवन में बनावटी पन आयेगा तब इन भोले भाले पहाड़ी लोगों को अवश्य याद आएगी।

संपर्क : सपना मांगलिक, f-659, आगरा उ. प्र. 282005, मोब. 9548509508, sapna8manglik@gmail।com